

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्॥ ॐ १/८६/२



Impact Factor  
7.523



ISSN : 2395-7115

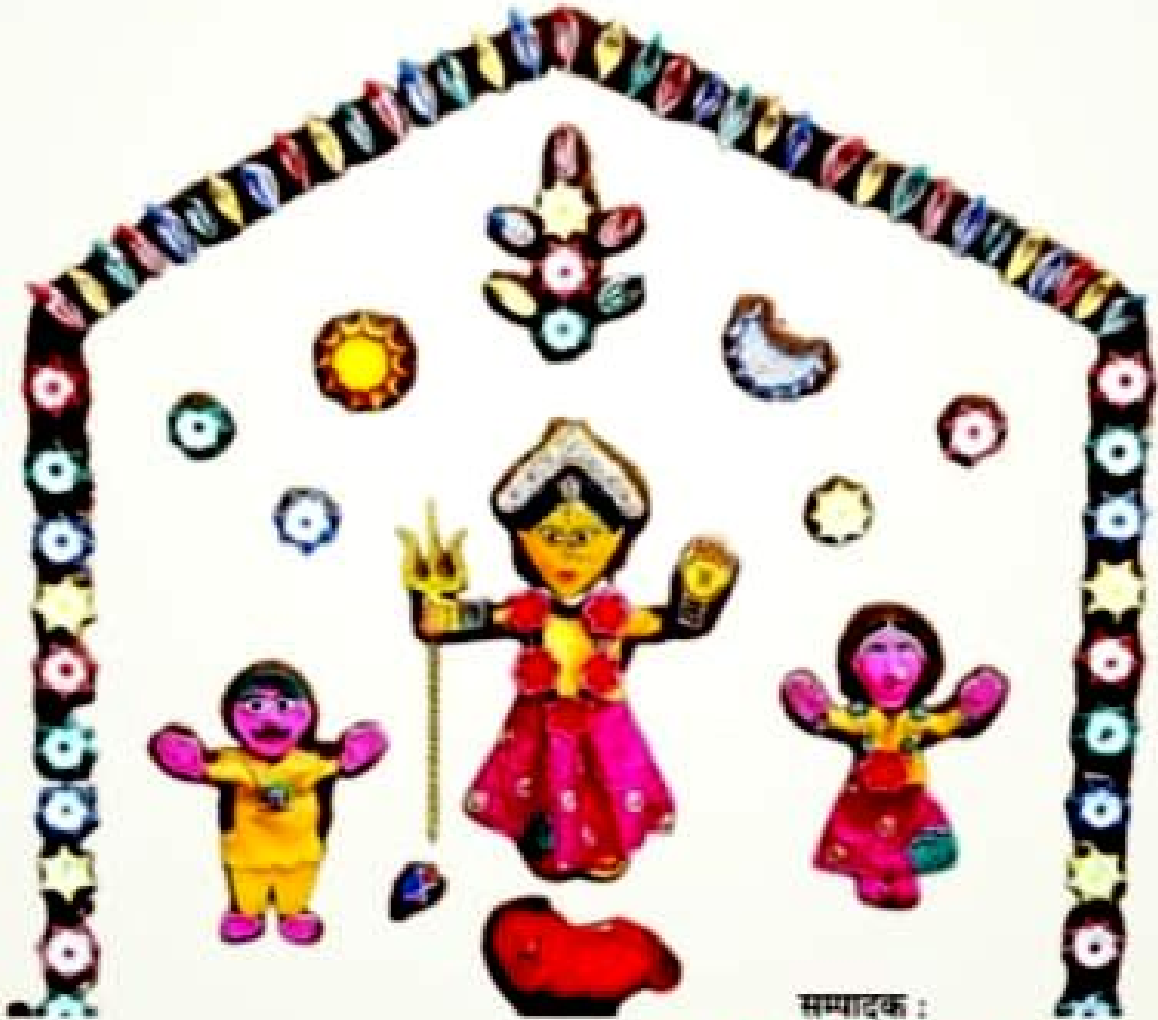
अक्टूबर 2024

Vol.-20, Issue-4

# Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY  
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)



सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :

**Gagan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)**

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

15.	स्वामी विवेकानंद के विचारों में समग्र शिक्षा की प्रासंगिकता	ज्योत्सना भट्ट मोहित कुमार शर्मा	81-85
16.	इलाचंद्र जोशी के उपन्यासों में नारी की विकासशील विचारधारा	पिट्टा राजकुमार	86-89
17.	संगीत में संतों एवं भक्त कवियों का योगदान	नेहा	90-93
18.	Reviving Tradition: Teejan Bai's Impact on Pandavani	Rakesh Ojha	94-96
19.	राष्ट्रीय आंदोलन में रोहिलखंड परिक्षेत्र से क्रांतिकारियों की भूमिका का : एक अध्ययन	Vishal Kumar Dr Rajat Gangwar	97-99
20.	भारत-नेपाल के सामाजिक और आर्थिक संबंधों का इतिहास	मोहित कुमार शर्मा ज्योत्सना भट्ट	100-103
21.	भारत में भीड़ जनित हिंसा एवम भीड़ द्वारा हत्या: एक समकालीन सामाजिक विधिक समस्या	अतुल कुमार सिंह	104-106
22.	साइबर खतरा "फेसबुक" : मनोरंजक लेकिन बेहद खतरनाक	डॉ० सुभाष चंद्र मौर्य	107-110
23.	समकालीन आलोचना में विचारधारा और विमर्श	दीपिका चौधरी	111-115
24.	हिंदी और तेलुगू कविताओं में दलित चेतना के सन्दर्भ	गुंडिगी सुधाकर	116-119
25.	रोचिका अरुण शर्मा की बाल कहानियों में चित्रित बच्चों का स्वभाव	वेंकट शिल्पा.काकि डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	120-124
26.	देवेश ठाकुर के उपन्यासों में वेश्या जीवन : एक त्रासद अभिव्यक्ति	देवराम	125-128
27.	गेय संवाद में हिन्दी फिल्म "हीर रांझा" (१९७०)	अरविंद कुमार सोनी डॉ. सुजीत कुमार सिंह	129-133
28.	प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान :- एक क्रमबद्ध	राजन कुमार	134-138



## रोचिका अरुण शर्मा की बाल कहानियों में चित्रित बच्चों का स्वभाव

वेंकट शिल्पा. काकि शोधार्थी ID: UP22G9650003

शोधनिर्देशिका डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन आसिस्टेंट प्रोफेसर और विभाग प्रमुख, हिन्दी विभाग  
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (विस्टास) पल्लावरम, चेन्नई, भारत.

प्रस्तुत आलेख में वर्तमान डिजिटलयुग का परिचय कराते हुए, बालसाहित्य की आवश्यकता के बारे में प्रकाश डाला गया है। वर्तमान समय के बाल साहित्यकारों में नवीन युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि साहित्यकार 'रोचिका अरुण शर्मा' जी की परिचय कराते हुए, इनकी बाल कहानियों का विवेचन किया गया है। खेल-खेल में वैज्ञानिक विषयों को समझाने में रोचिका जी माहिर हैं। इस आलेख में इनकी कहानियों में व्यक्त अभिमान, चिढ़ाना, पर्यावरण चिंतन जैसी विषयों की जानकारी देने का लघु प्रयास किया गया है। इस दौरान 'किताबों से बातें' कहानी संग्रह की कहानियों को लिया गया है।

**बीजशब्द:** बालसाहित्य, रोचिका अरुण शर्मा, अभिमान, चिढ़ाना, कुढ़ाना व अप्रसन्न करना, परोपकार, पर्यावरण.

### प्रस्ताव:

साहित्य समाज का हित के लिए लिखा जाता है। साहित्य में सदियों से मानव जीवन के उतार-चढ़ाव और विकास के बारे में समग्र ज्ञान उपलब्ध होता है। साहित्यकार इस ओर समाज व पाठकवर्ग को प्रेरित करने में सतत प्रयत्नशील हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो साहित्य का अभिन्न अंग बालसाहित्य, बच्चों की उन्नति की ओर प्रेरणास्त्रोत की भूमिका निभाती है।

इस जड़वत यांत्रिक युग में मानव जीवन को आराम दायक बनाने के लिए विभिन्न उपकरणों और साधनों का आविष्कार सतत हो रहे हैं। इंटरनेट के कारण आज विभिन्न क्षेत्रों के बारे में ज्ञान प्राप्त करना आसान हो गया है। पहले जमाने में माँ, दादी, नानी, गुरु, आदि ज्ञान प्राप्ति के प्रथम एवं प्रत्यक्ष स्त्रोत रहे। वे अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर अपने बच्चों और शिष्यों को ज्ञान प्रदान करते हैं। जो बच्चों की सकारात्मक विकास को प्रेरित करने में अहम भूमिका निभाती है। आज विभिन्न माध्यमों द्वारा प्राप्त ज्ञान की प्रामाणिकता संदिग्ध है। अतः उक्त ज्ञान बच्चों के हित में है या नहीं इसका निर्धारण करना एवं तराशना कठिन है। इंटरनेट से प्राप्त अति एवं अवांछित जानकारियों के प्रयोग से आजकल के बच्चे जाने-अनजाने में विभिन्न समस्याओं से जूझ रहे हैं। बच्चों के समस्याओं का समाधान प्रदान करने की क्षमता बालसाहित्य में है।

### बालसाहित्य:

हिन्दी साहित्य के विकास में आधुनिक काल महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इस आधुनिक काल में बालसाहित्य विशाल और अटल रूप लिया है। भारतेन्दु युग में विशेष रूप से बच्चों को केंद्र में रखकर साहित्य की रचना शुरू हुई है। 'बाल' और 'साहित्य' शब्दों के मेल से 'बालसाहित्य' शब्द उत्पन्न हुआ है। बालसाहित्य आधुनिक काल के आरंभ से वर्तमान समय तक विभिन्न चिंतन, दृष्टिकोणों के द्वारा विभिन्न विधाओं में विकसित हुआ है। हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य आलोचक डॉ नगेन्द्र बच्चों की आवश्यकताओं में बालसाहित्य का विशिष्ट स्थान माना है। उनकी दृष्टि में - "पहले समाज में बालक का अस्तित्व खिलौनों के रूप में था, उसको प्यार और दुलार तो मिलता था लेकिन उसे समाज का एक अभिन्न अंग नहीं समझा जाता था। लेकिन आज के बालक का नागरिक माना जाता है और बालक की आवश्यकताओं में एक आवश्यकता अच्छे बालसाहित्य की भी है।"<sup>1</sup> अर्थात् बालसाहित्य बच्चों की आंतरिक और बाह्य विकास में अनिवार्य है।

जिस प्रकार बीज बोते समय उससे आनेवाला महावृक्ष की कल्पना की जाती है, उसी प्रकार बालसाहित्य की रचना करते समय बच्चों एवं देश के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की कल्पना की जाती है। बालसाहित्य के बारे में बालसाहित्य के शीर्षस्थ कवि सोहनलाल द्विवेदी जी के मतानुसार- "सफल बालसाहित्य वही जिसे बच्चे सरलता से अपना सकें और भाव ऐसे हों, जो बच्चों के मन को भाएं। यों तो अनेक साहित्यकार बालकों के लिए लिखते रहते हैं किन्तु सचमुच जो बालकों के मन की बात बालकों की भाषा में लिख दे वही सफल बालसाहित्य लेखक है।"<sup>2</sup> हमें यह समझना जरूरी है कि बच्चों को खिलौनों के अलावा और कुछ चाहिए। वे अपने आस-पास के परिवार, परिवेश और समाज को जानना परखना चाहते हैं। बच्चों की इस कौतूहल को शांत करने की क्षमता बालसाहित्य में है। सीधे शब्दों में बालसाहित्य यथार्थ और कल्पना की सम्मिश्रण है। पाठ्य पुस्तकों में बच्चों की जिज्ञासा पूर्ति का अभाव है उसकी भरपाई बालसाहित्य द्वारा होता है। बच्चों में अच्छे संस्कारों का विकास, जीवन में एक निश्चित दृष्टिकोण, समाज के प्रति उत्तरदायित्व, आदि सकारात्मक गुणों का विकास में बालसाहित्य महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। आधुनिक युग में इस मुद्दे की ओर विभिन्न साहित्यकारों ने अपनी लेखिनी चलाई है। इस दृष्टि में हरिकृष्ण देवसरे, परशुराम शुक्ल, जहूरभक्ष, प्रेमचंद, सुभद्राकुमारी चौहन, अमृतलाल नागर, सोहनलाल द्विवेदी, शकुंतला सिरोठिया, राष्ट्रबंधु, श्री प्रसाद, जयप्रकाश भारती, चित्रा मुद्गल, दीविक रमेश, सुरेन्द्र विक्रम, उषा यादव, प्रकाश मनु, क्षमा शर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

#### **रोचिका अरुण शर्मा - एक सामान्य परिचय :**

समकालीन युग में बच्चों को समयोचित ज्ञान और विज्ञान का सही मिश्रण अपने रचनाओं के द्वारा प्रदान कर रही है बालसाहित्यकार 'रोचिका अरुण शर्मा'। नवीन पीढ़ी के प्रतिनिधि युवा साहित्यकार रोचिका अरुण शर्मा ने कोटा से अपनी पढ़ाई पूरी की। मानव जीवन के कई भावनावों को बाल मानोविज्ञान के धरातल पर समझाने में रोचिका जी विदूषी हैं। वे विभिन्न हिन्दी प्रचार संस्थाओं से जुड़ कर हिन्दी प्रचार में कार्यरत हैं। रोचिका जी सफल कवयित्री, कहानीकार, संपादक, संचालक और अनुवादक हैं।

**रचना काल:** हिन्दी साहित्य जगत में रोचिका जी 21 वीं सदी में आपका पदार्पण हुआ। 'एक घूंट चाय' इनकी प्रथम रचना है।

**भाषा शैली:** रोचिका जी अपनी रचनाओं में बाल सुलभ, सरल और सामान्य शब्द व भाषा शैली का प्रयोग करती हैं। गंभीर विषय को भी बालानुकूल शैली में प्रस्तुत करने में वे विदूषी हैं। शुद्ध हिन्दी के साथ बोलचाल के शब्दों का प्रयोग, संदर्भ अनुकूल वाक्यांश का प्रयोग करने में वे निपुण हैं। कथा विषय और पात्र दैनिक जीवन से रूबरू करते हैं। सीधे, सरल और स्पष्ट शब्दों में अपनी विचारों को प्रस्तुत करना उनकी खासियत है।

**रचनाएँ:**

**कहानी संग्रह:** जो रंग दे वो रंगरेज, हार्ट इमोजी की धड़कन.

**बाल कहानी संग्रह:** सिद्धू बन गया जादूगर, किताबों से बातें, मेरे दोस्त मेरे साथ.

**बालकविता:** एक शहर बच्चों का होता

इसके साथ ही विभिन्न किताबों का सम्पादन, अनुवाद किए हैं। अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

**सम्मान:**

अपनी रचनाओं के लिए विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा इन्हें नवाजा गया है। जैसे-पंडित जवाहर लाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी द्वारा 'बाल साहित्य सृजक' सम्मान। साथ ही विभिन्न कविता, कहानी और निबंध प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

**किताबों से बातें कहानी संग्रह :**

'किताबों से बातें' कहानी संग्रह में कुल पंद्रह कहानियाँ हैं। जैसे: क्रिया-प्रतिक्रिया, गर्मी के हँसगुल्ले, दाग भी अच्छे लगते हैं, आदि। इन कहानियों में मनोरंजन, पर्यावरण चिंतन, नैतिक मूल्य, बाल मानोविज्ञान, व्यवहारकुशलता आदि पर उन्होंने प्रकाश डाला है।

**अभिमानिरुख:**

वर्तमान काल में ज्यादातर बच्चे स्वार्थी बने हैं। सिर्फ अपनी खुशी और आनंद को प्रमुख्यता दे रहे हैं। अपनी संपन्नता को दिखाकर औरों के अभाव का मजाक उड़ाते हैं। यह गुण बच्चों की उज्ज्वल भविष्य में बाधा उत्पन्न करता है। इसे अवश्य सुधारना चाहिए। मित्रता की खूबियत और परोपकार गुण बच्चों की उन्नति के लिए आवश्यक है। इन्हीं गुणों का पुष्टीकरण 'दाग भी अच्छे लगते हैं' और 'चुन्नू खरगोश और गन्नू चूहा' कहानियों द्वारा लेखिका ने उल्लेख किया है।

'दाग भी अच्छे लगते हैं' कहानी में मुख्य पात्र गुल्लू जो अभिमानि है अपने आप पर नाज करता है। वह वर्षाकाल में बारिश के बाद अपना नया लाल साइकिल ले कर सड़क पर सवार हो जाता है।

सड़क पर गंदा पानी के गड्डों के ऊपर से साइकिल इस प्रकार चलता कि गड्डे का गंदा पानी उछलकर पास खेल रहे बच्चों पर छिड़के। इस प्रकार कई बार करने से गुल्लू के दोस्त चिढ़ जाते हैं। बच्चों ने गुल्लू को समझाते हुए कहे-“देखो गुल्लू तुम इस तरह बारिश का गंदा पानी हम पर न उछालो .... हमारे कपड़े गंदे हो जाते हैं और यह गंदा पानी शरीर पर लगने से फोड़े-फासियाँ भी हो जाते हैं।”<sup>3</sup> इस प्रकार गुल्लू के माध्यम से लेखिका बच्चों में दूसरों को अप्रसन्न करने की स्वभाव को दर्शाया है। पर इसका कदर न करते हुए गुल्लू दोस्तों को कुढ़ाते हुए कहता है-“दाग भी अच्छे लगते हैं।”<sup>4</sup> इससे दोस्तों को भड़काता है। परिणामस्वरूप वे अपने मित्र का व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहते हैं। वे लाल दावा में स्टेशनरी का गोंद मिला कर साइकिल पर लगा देते हैं। इस वजह से गुल्लू के हाथों और पैरों पर लगा लाल रंग देखकर गुल्लू के दोस्त उसका खिल्ली उड़ाते हैं। गुल्लू की माँ से गुल्लू को सबक सिखाने के पीछे छिपी कहानी का जानकारी देते हुए उनके मित्र कहते हैं- “माफ कीजिये आँटी आपको हमारी वजह से परेशानी होगी, उसकी पैरों के दाग साफ करने पड़ेंगे।”<sup>5</sup> यथा गुल्लू के दोस्त दोस्ती का उत्कृष्ट मिसाल बन कर अपनी ईमानदारी का परिचय देते हैं। माँ की हिदायत से गुल्लू अपने व्यवहार में सुधार लाता है। रोचिका जी आजकल के बच्चों के स्वभाव और व्यवहार का सुंदर प्रस्तुतीकरण इस कहानी में किया है।

ऐसी ही पात्र का चित्रण हमें ‘चुन्नू खरगोश और गन्नू चूहा’ कहानी में मुख्य पात्र चुन्नू खरगोश के द्वारा प्राप्त होता है।

#### परोपकार:

बच्चों में परोपकारी भावना जागृत करने की प्रयास ‘चुन्नू खरगोश और गन्नू चूहा’ कहानी में लेखिका मुख्य पात्र गन्नू चूहा के माध्यम से किया है।

जंगल में चुन्नू खरगोश अपनी सुंदरता पर गर्व करते हुए दूसरों को नीचा दिखाने में आनंद लेती है। इस स्वभाव के कारण वह गन्नू चूहा को बदसूरत कहते हुए बहुत कुढ़ता है। जैसे की “सभी बच्चे मुझसे खेलना भी पसंद करते हैं और तुम! अपने आप को देखो कितने छोटे से, और इतनी लम्बी पूँछ और ऊपर से तुम्हारा काला भूरा रंग! छी: तुम कितने भद्दे दिखते हो।”<sup>6</sup> इस स्वभाव से सुधार लाने के लिए मित्रता और एकता का पालन करने वाले जंगल का प्रत्येक जानवर का सुबोध निष्फल हो जाता है। एक दिन जंगल में शिकारी आता है और चुन्नू शिकारी का शिकार बन जाता है। उसी रास्ते से आ रहा गन्नू चूहा, अभिमान के कारण सदा उसे चिढ़ाया चुन्नू खरगोश को शिकारी का जाल में छोड़े बिना एकता और मित्रता के कारण बचाती है। गन्नू चूहा के माध्यम से लेखिका ने जरूरतमंद को सहायता करने की पाठ बच्चों को पढ़ाई है। गन्नू की अच्छे गुणों से प्रेरित हो कर चुन्नू जंगल के सभी जानवरों के सामने अपनी गलती की माफी माँगती है और गन्नू से मित्रता करती है।

#### पर्यावरण:

बच्चों पर्यावरण के बारे में ज्ञान व जानकारी प्राप्त करके प्रकृति सौन्दर्य का भरपूर आनंद ले पाते हैं। पर्यावरण का महत्व एवं उनकी सूक्ष्म विषयों के बारे में रोचिका जी की कुशल प्रस्तुतीकरण ‘गुन गुनी धूप’ कहानी में मिलती है। कहानी का मुख्य पात्र राजू सर्दियों के मौसम में पिकनिक के बहाने घर से